गायक के गुण - अवगुण :-

गायक की परिभाषा :-

योग्य रस भाव तथा भावांग की उचित रूप से साधना करते हुए जो गायक गाता है, उसका संगीत मोहनी रूप होकर श्रोताओं के मन को जीतने में अवश्य ही सफल होता है। इसीलिए हमारे प्राचीन ग्रंथकारों ने गायकों के गुण - अवगुणों का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया है।

श्रोताओं में सभी तरह के व्यक्ति होते हैं। कोई श्रोता गीत की कविता पर ध्यान देता है। कोई गायक के सुरीलेपन और लयकारी को देखता है और कोई गायक - गायिका के रूप-रंग तथा उसके हाव - भाव प्रदर्शित करने के ढंग में ही आनन्द लेता है। इस प्रकार संगीत कला के सभी अंगों से भिन्न - भिन्न प्रकार के श्रोता अपनी रुचि के अनुकूल रसास्वादन करते हैं। अतः प्रत्येक संगीत विद्यार्थी को आरम्भ से ही ध्यान देकर गायकों के गुण अपनाने चाहिए और अवगुणों से बचना चाहिए।

प्रत्येक विद्यार्थी यदि उन पर आरम्भ से ही ध्यान देगा तो उसके लिए वह हितकर होगा।

गायक के गुण :-

1/ हयशब्द :- जिसका शब्द अर्थात आवाज मधुर प्रिय हो।

2/ सुशरीर :- जिसकी वाणी में अभ्यास के बिना राग स्वरूप व्यक्त करने का गुण (तासीर हो)।

3/ ग्रहमोक्षविचक्षण :- जो ग्रह और न्यास के नियमों को जानने वाला हो।

4/ रागरागांग कोविद :- जो भाषांग क्रियांगोपांग राग-रागांग इत्यादि को जानकर हो।

5/ प्रबंधगाननिष्णात :- जो प्रबंधगान में प्रवीण हो (प्रबंध एक प्रकार की प्राचीन गान-शैली है, जो वर्तमान समय में प्रचलित नहीं है)

6/ विविधालप्तीतत्ववित :- जो भिन्न आलप्तियों के तत्व का ज्ञाता हो, अर्थात आलाप करने की गूढ़ बातें जानता हो।

7/ सर्वस्थानोद्यागम कैवभायलप्तपद्धति :-

जो सब स्थानों की गमक सहज में ही ले

सकता हो, अर्थात् मंद्र, मध्य और तार, इन तीनों स्थानों में गमकों का प्रयोग कर सके।

1 8/ आयत्तकंठ :- जिसका कंठ स्वाधीन हो, अर्थात् खुली हुई आवाज हो।

4 9/ तालज्ञ :- जो ताल ज्ञान रखने वाला हो।

1 10/ सावधान :- जो एकाग्रचित्त होकर सावधानी पूर्वक गाए।

1 11/ जितश्रम :- जो श्रम को जीतने वाला हो अर्थात् गाते समय यह अनुभव न हो कि गाने में बड़ा परिश्रम करना पड़ रहा है।

3 12/ शुद्धच्छायालगाभिज्ञ :- जो शुद्ध, छायालग और संकीर्ण-इन राग-भेदों को जानने वाला है।

3 13/ सर्वकाकुविशेषवित् :- जो संगीत शास्त्रों में वर्णित षड्विधि यानी छह प्रकार के शत्रुओं का प्रयोग करने की जानकारी रखता है।

4 14/ अनेकस्थायसंचार :- जो गाते समय असंख्य स्थाय अर्थात् रागों के भाग या हिस्से तैयार करके सुनाने का ज्ञान रखता हो।

सर्वदोषविवर्जित :- जो सब प्रकार के दोषों से रहित हो, अर्थात् जिसमें कोई दोष न हो।

क्रिया पर :- जो अभ्यास में दक्ष हो, अर्थात् रियाज़ी हो।

अजस्त्र लय :- जो अत्यन्त लयदार हो।

सुगट :- जो सुघड़ (सुन्दर) हो, अर्थात् जिसे देखकर श्रोता घृणा ना करे।

धारणान्वित :-

स्फूर्जन्निर्जवन :- जो धारणावान् हो।

~~हरिरहकृद्भजनोद्धुर :-~~ जो 'निर्जवन' की गति समय मेघ गर्जना के समान गंभीर आवाज निकालने वाला हो।

हरिरहकृद्भजनोद्धुर :- जो अपने गायन से श्रोताओं के मन को मोहित करने वाला हो।

सुसम्प्रदाय :- जिसकी गुरु परम्परा उच्च श्रेणी हो, अर्थात् जो ऊँचे सम्प्रदाय का हो।

Date 02/01/2011
Page No. 27
Shivalal

गायक के अवगुण :-

1 1/ संदष्ट :- दांत पीस कर गाने वाला है।

1 2/ उद्घुष्ट :- जो नीरस, जोर से गाने वाला है।

2 3/ सूत्कारी :- जो गाते समय सूत्कार करने वाला है।

2 4/ भीत :- जो भयभीत होकर गाने वाला, अर्थात् जो डरते-डरते गाए।

2 5/ शंकित :- जो आत्मविश्वास रहित होकर गाए। अर्थात् जो घबरा कर जल्दबाजी से गाने वाला हो।

2 6/ कंपित :- जो कांपती हुई आवाज से गाने वाला हो।

1 7/ कराली :- जो भयंकर मुँह फाड़कर गाने वाला हो।

12 8/ विकल :- जिसके गाने में श्रुतियाँ कम या अधिक लग जाती हों, अर्थात् जिसके स्वर अपने उचित स्थान पर न लगते हों।

3 9/ काकी :- जो कौए के समान कर्कश आवाज़ वाला हो।

Date 02/11/2011
Page No: 28
Shivalal

4 10/ विताल :- जो बेताल गाने वाला हो।

1 11/ करभ :- मुंडी ऊँची करके गाने वाला हो।

3 12/ उद्भट :- जो भेड़ की तरह मुँह फाड़कर गाने वाला हो।

1 13/ झूलक :- जो गले और मुँह की नसें फुलाकर गाने वाला हो।

3 14/ तुंबकी :- जो तुंबे के समान मुँह फुलाकर गाने वाला हो।

1 15/ वक्री :- जो मुंडी टेढ़ी कर के गाने वाला हो।

3 16/ प्रसारी :- जो हाथ - पैर फेंक - फेंक कर या हाथ - पैर पटक कर गाने वाला हो।

3 17/ विनिमीलक :- जो आँखें बंद करके या आँखें मींच कर गाने वाला हो।

4 18/ विरस :- जिसके गाने में रस ना हो, अर्थात् नीरस गाने वाला हो।

4 19/ अत्यर-वर :- जिसके गाने में वर्जित स्वर भी लग जाए।

4 20/ अव्यवस्थित :- गाते समय जिसका शब्दोच्चारण ठीक नहीं

Day Tuesday

Date 07/12/2010
Page No. 1
Shivlal

तान की परिभाषा :- स्वरों को तानने व खींचने की प्रक्रिया को "तान" कहते हैं।

राग के शास्त्रगत नियमों के आधार पर स्वरों की रचना जो निबद्ध होती है उसे हम साधारण रूप से "ताल" कहते हैं। तानों का गायन मध्यलय एवं विलम्बित लय की दोनों रचनाओं में गायन किया जाता है। जिस तरह किसी दुल्हन को सजाने में शृंगार का खास तौर से (आभूषण) का अत्यन्त महत्व है, उसी तरह ख्याल की गायकी में सौन्दर्य बढ़ाने के लिए तानों का महत्वपूर्ण स्थान है।

तानों के प्रकार :- (1) शुद्ध तान, (2) कूट तान, (3) मिश्र तान, (4) खटके की तान, (5) झटके की तान, (6) वक्र तान, (7) आलाप तान, (8) सरोक तान, (9) लड़न्त तान, (10) सपाट तान, (11) गिटकरी तान, (12) जबड़े की तान, (13) हलक तान, (14) पलट तान, (15) बोल तान।

(1) शुद्ध तान → जिस तान में स्वरों का क्रम एक-सा हो और आरोह-अवरोह सीधा-सीधा हो, उसे "शुद्ध तान" या "सपाट तान" कहते हैं।

(2) कूट तान → जिस तान में स्वरों का क्रम निश्चित ना हो, हमेशा जिसकी तान

टेढ़ी-मेढ़ी हो, उसे "कूट तान" कहते हैं।
→ "सारे गरे मप मप रेग मप धसा धप"।

(3) मिश्र तान → शुद्ध तान तथा कूट तान, इन दोनों का जिसमें मिश्रण हो, उसे मिश्र तान कहते हैं।
→ "पध निसा गम पध, धप मप गम रेसा।"

(4) खटके की तान → स्वरों को धक्का लगाते हुए तान ली जाए तो उसे "खटके की तान" कहते हैं।
→ "गग रेसा मम गरे पप मम गरे।"

(5) झटके की तान → जब तान दुगुनी चाल में जा रही हो और अचानक बीच में चौगुन की ताल में जाने लगे तो, उसे "झटके की तान" कहते हैं।
→ "सारे गम पध निसां निध पम सारेगम पधनिसां"

(6) वक्र तान → यह कूट तान के समान होती है।

(7) अचरक तान → जिस तान में प्रत्येक एक स्वर दो से बोले जाए। उसे "अचरक तान" कहते हैं।
→ "सासा, रेरे, गग, मम, धध।"

(8) सरोक तान → जिस तान में चार-चार स्वर एक क्रम में हो, उसे सरोक

तान" कहते हैं।
→ "सा रे गम रे ग मप गम पध।"

(9) अड़न्त तान → जिस तान में सीधी-आड़ी कई प्रकार के स्वर दिखाई देते हैं, उसे "अड़न्त तान" कहते हैं।
→ "निसा निसा रे रे रे रे

(10) सपाट तान → जिस तान में स्वरों का क्रम एक सा जाता है, उसे "सपाट तान" कहते हैं।
→ "मप धनि सा रे ग म प धनि सा।"

(11) गिटकरी तान → दो स्वरों की एक साथ शीघ्रता से एक के पीछे दूसरा लगाते हुए गाया जाता है उसे गिटकरी तान कहते हैं।
→ "नि सा नि सा नि सा, सा रे सा रे सा रे।"

(12) जबड़े की तान → कंठ के अंतस्थल से आवाज निकाल कर जबड़े की सहायता से जब तान ली जाती है, तो उसे "जबड़े की तान" कहते हैं।
यह सुलझे हुए कलाकार ही गा सकते हैं।

(13) हलक तान → जीभ को क्रमानुसार भीतर बाहर ले जाते हुए "हलक तान" ली जाती है।

(14) पलट तान → किसी तान को लेते हुए अवरोह करके लौट आने की क्रिया को "पलट तान" कहते हैं।
→ "सानि धप मग रे सा।"

(15) बोल तान → जिन तानों में तान के साथ-साथ गीत के बोल भी मिलाकर विलम्बित, मध्य और द्रुत तीनों लय में गाये जाते हैं, "बोल तान" कहलाते हैं।
बोल तान के दो प्रकार होते हैं →
(i) आलाप।
(ii) बढ़त।

Day Friday

पूर्वराग व उत्तरराग

अपने हिन्दुस्तानी संगीत - विद्वान् रागों के दो वर्ग करते हैं-

1. पूर्व राग।
2. उत्तर राग।

1. पूर्वराग या पूर्वांगवादी राग →

जिन रागों का वादी स्वर जब सप्तक के पूर्वांग अर्थात् 'सारेगम' इन स्वरों में से होता है, तो वे "पूर्वांगवादी राग" कहे जाते हैं। ऐसे राग प्रायः दिन के पूर्व भाग यानी दिन के बारह बजे से रात्रि के बारह बजे तक के समय में गाए बजाए जाते हैं। पद्धति में पूर्वांग का क्षेत्र सा से प तक माना जाता है। कुछ पूर्वांग में पंचम स्वर वादी के रूप में दिखाई देता है।

सा रे ग म	प ध नि सां
पूर्वांग	उत्तरांग

NOTE → सा म प यह स्वर पूर्व राग भी और उत्तरराग भी होते है।

2. उत्तरराग या उत्तरांगवादी →

जिन रागों का वादी स्वर सप्तक के उत्तरांग अर्थात् 'प ध नि सां' इन स्वरों में से होता है वे "उत्तरांगवादी" राग कहे जाते है।

ऐसे रागों प्रायः दिन के उत्तर भाग अर्थात् रात्रि के ~~समूह~~ बारह बजे से दिन के बारह बजे तक ही गाए बजाए जाते है।

संधि प्रकाश राग →

दिन और रात्रि की संधि अर्थात् मेल होने के समय को "संधि काल" कहते हैं। प्रायः सूर्योदय से पहले और शाम को सूर्यास्त से कुछ पहले का समय ऐसा होता है, जिसे न तो दिन ही कह सकते है, न रात्रि ही। इसी समय को "संधि प्रकाश की बेला" कहा गया है और इस बेला में जो राग गाए बजाए जाते हैं, उन्हें ही "संधि प्रकाश राग" कहते हैं जैसे → भैरव, कालिंगड़ा, भैरवी, पूर्वी, मारवा इत्यादि।

संधि प्रकाश के भी दो राग माने गए हैं।

1. प्रातः कालीन संधि प्रकाश राग।
2. सायं कालीन संधि प्रकाश राग।

जो राग सूर्योदय के समय गाए बजाए जाएंगे वे "प्रातः कालीन प्रकाश राग" होंगे और जो सूर्यास्त के समय समय गाए बजाए जायेंगे, उन्हें "सायं कालीन संधि प्रकाश राग" कहेंगे।

परमेल प्रवेशक → 'परमेल' का अर्थ है दूसरा कोई मेल और 'प्रवेशक' यानि प्रवेश करने वाला अर्थात् "परमेल प्रवेशक" राग" वे कहे जाते हैं, जो किसी एक मेल (ठाठ) से किसी दूसरे मेल (ठाठ) में प्रवेश करते हैं। उदाहरणार्थ → संध्या काल में गाए जाने वाले संधि प्रकाश रागों को गाकर जब गायक समयानुसार दूसरे किसी मेल के राग गाना चाहता है; जैसे श्रीमपलासी, धनाश्री और धानी गाकर जब कोई गायक मुलतानी गाने लगता है तो उससे यह संकेत होता है कि अब गायक किसी दूसरे ठाठ (यमन इत्यादि) में प्रवेश करने वाला है। इस प्रकार मुल्तानी परमेल प्रवेशक राग माना गया है। एक उदाहरण से यह और स्पष्ट किया जाता है :-

रात्रि को जब 'रे सा' शुद्ध वाले वर्ग के रागों का समय समाप्त हो जाता है और 'ग नि' कोमल वाले वर्ग के रागों को गाने का समय आने वाला होता है, उस समय जय जयवंती "परमेल प्रवेशक राग" माना जाएगा; क्योंकि जय जयवंती राग में 'रे ध' शुद्ध वाले वर्ग तथा 'ग नि' कोमल वाले वर्ग, दोनों में ही कुछ कुछ विशेषताएँ मौजूद हैं। जय जयवंती में दोनों गांधार, दोनों निषाद

और शुद्ध रे ध लगते हैं। अतः यह राग दूसरा मेल आरंभ होने की सूचना देकर "परमेल प्रवेशक राग" कहलाता है।

Question:- मुगल काल से अब तक के संगीत का संक्षिप्त इतिहास :-

[सन 1525 ईसवी से 1740 ईसवी तक]

मुगलकाल में हुमायु और बाबर भारतीय संगीत के विकास में उतने सक्षम नहीं थे या हम अपने शब्दों में ये कह सकते हैं कि इनके काल में संगीत का इतना विकास नहीं हो सका क्योंकि संगीत इनके लिए मनोरंजन का विषय था।

इसके बाद जब अकबर 1560 ईसवी से 1605 ईसवी में गद्दी पर बैठे तब हिन्दुस्तानी संगीत का ~~मह~~ सबसे महत्व-पूर्ण विकास हुआ। इसकी मूल वजह यह थी कि अकबर बेहद बुद्धिमान कला प्रेमी एवं सभी धर्मों के प्रति उसका आदरपूर्ण व्यवहार था। अकबर के दरबार में संगीत के नौ रत्नों में संगीत सम्राट तानसेन का नाम सबसे उल्लेखनीय है। इसके पूर्व जितने भी शासक थे उन्होंने जातिवाद का निर्वाह करते हुए मुस्लिम लोगों को ही संगीत और कला के क्षेत्र में प्रोत्साहित

Day Thursday

Date 23/12/2010
Page No. 9
Shivalal

किया था किन्तु अकबर एक ऐसा मुस्लिम शासक था जिसने अपने अन्य धर्म व जाति के लोगों को भी संगीत, कला और साहित्य के क्षेत्र में पारंगत थे, उन्हें अपने दरबार में विशेष स्थान दिया। अकबर के दरबार में तानसेन और बैजू बावरा के उस्ताद स्वामी हरिदास और रामदास मदराय, ब्रिज चंद्र, श्री चंद्र, सूरदास, मीरा बाई, कबीरदास, गशीबदास और वल्लभ सम्प्रदाय से के संगीत शिरोमणि विशेष उल्लेखनीय है।

• संगीत के विशेष व्यक्तियों का उल्लेख :-

(i) तानसेन और बैजूबावरा :- तानसेन और बैजू बावरा रीवा के राजा रामचंद्र के यहाँ दरबार के गायक थे लेकिन बढ़ती प्रसिद्धि के कारण अकबर ने अपने दरबार में बुला लिया। इनके बीच सांगीतिक प्रतियोगिताएँ आयोजित होती रहती थीं। तानसेन ने कुछ रागों का अविष्कार भी किया जिसमें मियां की सारंग, मियां की मल्हार और दरबारी कन्हड़ा इत्यादि शामिल है।

(ii) स्वामी हरिदास :- स्वामी हरिदास, तानसेन और बैजू बावरा के गुरु थे। जो संगीत के माध्यम से भक्ति

का प्रचार जगह - जगह किया करते थे। अकबर सदैव तानसेन की तारीफ किया करते थे किन्तु तानसेन हमेशा अपने गुरु के गुणों का बखान करते थे और यह प्रमाण देते थे कि स्वामी हरिदास मुझसे अच्छा गाते हैं। इस बात को सार्थक करने के लिए जान बूझ कर जब तानसेन ने गलत स्वर गाया तो तुरन्त स्वामी हरिदास ने उसे सुधार कर गाया, यह सब कुछ अकबर सामने घटित हुआ। तब अकबर ने स्वयं यह महसूस किया कि स्वामी हरिदास तानसेन से अच्छा गाते हैं, तब तानसेन ने उन्हें जवाब स्वरूप एक ही चीज़ कही कि मेरे और गुरु के गाने में सिर्फ इतना अन्तर है कि गुरु उस वक्त गाते हैं जब उनका मन करता है और मैं आपके आदेश का पालन करते हुए आपके कहने पर गाता हूँ।

(iii) सूरदास, कबीरदास, तुलसीदास और मीराबाई :-

सोलहवीं शताब्दी में संगीत के साथ भक्ति का विशेष महत्वपूर्ण काल रहा। जिसमें सूरदास रचित 'सूरसागर', तुलसीदास रचित 'रामायण' हिन्दु मुस्लिम एकता के प्रति स्वामी कबीरदास एवं कृष्ण भक्त सुप्रसिद्ध गायिका एवं कवियत्री मीराबाई इन सभी ने इस काल में संगीत के साथ भक्ति का

विशेष प्रचार-प्रसार किया। जो आज भी वर्तमान समय में गाया बजाया जा रहा है।

(iv) जहांगीर :- अकबर की मृत्यु के बाद जब इनके पुत्र जहांगीर 1605 ईसवी में गद्दी पर बैठे तब इनके काल में संगीत रस एवं नृत्य कला का विशेष प्रचार-प्रसार था एवं इसकी ईरानी व अरबी संगीत को हिन्दुस्तानी संगीत में मिलाकर विशेष निखार संगीत में लाया गया।

(v) औरंगजेब एवं बहादुर शाह जफर :-

जहांगीर की मृत्यु के बाद औरंगजेब के काल में संगीत का स्तर काफी गिर चुका था और संगीत विलासिता की ओर अग्रसित था। जो नृत्यांगनाओं और नगर कणिकाओं के हाथों तक सीमित रह गया था।

बहादुर शाह जफर के काल में शायरी कव्वाली, गज़लों का विशेष महत्व था।

(vi) मोहम्मद शाह रंगीले :- इनके काल में संगीत का स्तर कुछ उठा और विभिन्न संगीतकार पैदा हुए जैसे- अवारंग, सदा रंग और महारंग। इस काल

में ठप्पा ठुमरी का विशेष प्रचार था।

अंग्रेज काल [1750 ईस्वी]

अंग्रेजों के काल में भारतीय संगीत पूर्णतः अपनी पहचान खो चुका था क्योंकि अंग्रेज इन्हें हीन भावना की दृष्टि से देखते थे एवं अपनी सभ्यता के आगे इस कला को तिरष्कार की दृष्टि से देखते थे।

पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति प्रचार में आने लगी थी और संगीत वेश्याओं के हाथों तक सीमित रह गया था इन्हीं के काल में संगीत विभिन्न घरानों में बटा और कई संगीतज्ञों ने मिलकर एक ग्रन्थ की रचना की। जिसका नाम 'संगीत सार' था। भारतीय संगीत का मुख्य केन्द्र तंजावुर था।

आधुनिक काल [1900 ईसवी से 1950 ईस्वी तक]

इस काल में संगीत को विशेष स्थान देने में महाराष्ट्र की दो विभूतियों को दिया जाता है। जिन्होंने जगह-जगह घूमकर संगीत का प्रचार किया। पंडित विष्णुनारायण भातखण्डे एवं पंडित विष्णुदिगंबर पलुस्कर ने विभिन्न संगीत

सम्मेलनों के माध्यम से संगीत का प्रचार किया और संगीत के महाविद्यालयों की स्थापना की। इन्होंने संगीत को व्यवस्थित तरह लिपीबद्ध किया। जो विभिन्न पुस्तकों के नाम से क्रमिक पुस्तक मालिका इत्यादि में संग्रहित है। इसी काल में गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने शास्त्रीय संगीत के साथ विभिन्न प्राचीन राग रागिनियों को मिश्रित कर उल्लेखनात्मक रूप दिया और रविन्द्र नाथ संगीत नाम से एक नई गायन शैली का निर्माण किया।

स्वतंत्र भारत में अब तक संगीत
[1947 ईसवी से अब तक]

1947 ईसवी में जब देश स्वतंत्र हुआ तब भारतीय संगीत का विस्तार काफी तेजी से होने लगा। संचार के विभिन्न माध्यमों रेडियो, टेलीविजन इत्यादि के कार्यक्रमों में शास्त्रीय संगीत एवं उनके कलाकारों को विशेष महत्ता प्रदान की। शास्त्रीय संगीत विभिन्न पाठ्यक्रमों में अन्य विषयों की तरह शामिल किया गया जिसमें बी.ए., एम.ए., और पी.एच.डी. संगीत विषयक उपाधियाँ दिए जाने लगे।

इसके साथ ही संगीत में इलेक्ट्रानिक वाद्य यंत्रों का प्रचार-प्रसार बढ़ा।

4/a Sundaram

Question :- अमीर खुसरो, स्वामी हरिदास, तानसेन तथा मानसिंह तोमर का जीवन परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।

स्वामी हरिदास :- जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास को "हिन्दी साहित्य का माधव" कहा जाता है उसी प्रकार स्वामी हरिदास को भी भारतीय संगीत का एक माना जाता है। स्वामी हरिदास जी का जन्म भाद्रपद शुक्ल अष्टमी संवत 1569 ईसवी में उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में खैर वाली सड़क के एक छोटे से गाँव में हुआ बाद में इसी गांव को हरिदासपुर के नाम से जाना जाने लगा। इनके पिता आशुधीर मुल्तान जिले के ब्राह्मण कुल के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इसकी माता का नाम गंगा था। स्वामी हरिदास के अंदर संगीत के संस्कार बाल्यावस्था से ही विद्यमान थे। आगे चलकर ये संस्कार विकसित हुए और कृष्ण भक्ति में लीन हुए। 25 वर्ष की तरुण अवस्था में वृन्दावन आकर ये निधिवन निकुंज की एक झोपड़ी में निवास करने लगे। ब्रज की धरती पर यमुना के जल में आकाश मंडल के चाँद-तारों में भगवान कृष्ण की मनोरम झाँकियाँ करने लगे। चारों ओर से मुरली के मधुर स्वर और नाद ने स्वामी हरिदास जी ने ब्रज को आत्म-विभोर कर दिया। यही पर स्वामी हरिदास

जी ने ब्रज भाषा में अनेक ध्रुपदों, शास्त्रीय रागों एवं तालों में गाकर संगीत के जिज्ञासुओं को तृप्त किया। स्वामी हरिदास का साक्षात्कार ब्रह्म जी से हुआ है। ऐसा प्राचीन ग्रंथों में कहा है जिसकी वजह से इन्हें "नाद ब्रह्म योगी" के नाम से भी जानते हैं।

स्वामी हरिदास के शिष्यों के नाम नाद विनोद नामक ग्रंथ में इस प्रकार से है – बैजू बावरा, गोपाल लाल, मदन राग, रामदास, दिवाकर पंडित, सोमदास पंडित, तन्ना मिश्र (तानसेन) और राजा सौर सेन इत्यादि थे।

* कर्नाटक को छोड़कर उत्तरी भारत के सभी क्षेत्रों में स्वामी हरिदास एवं उनके शिष्यों की ही शास्त्रीय संगीत को देन है। ब्रज की रासलीला जो आज वर्तमान में भी प्रचलित है वो स्वामी हरिदास जी की ही देन है। स्वामी हरिदास जी के द्वार पर बड़े-बड़े राजा महाराजा उनके संगीत को सुनने आते थे किन्तु स्वामी हरिदास अपने स्थान को को छोड़कर कभी भी कहीं नहीं जाते है। कहा जाता है कि एक बार सम्राट अकबर ने भी तानसेन के साथ आकर गुप्त रूप से स्वामी जी का गमन हुआ।

स्वामी हरिदास जी का निधन

संवत् 1664 में 95 वर्ष की आयु में निधिवन निकुंज के वनों में विलीन हो गए।

तानसेन :- सन् 1500 ईसवी ग्वालियर में मुकुंद राम पांडे जिन्हें मकरंद पांडे के नाम से जाना जाता था जो पांडित्य और संगीत में पारंगत थे। इनकी चिंता सिर्फ एक संतान प्राप्ति की थी आगे चलकर मोहम्मद गौस नामक एक सिंह फकीर के आशीर्वाद से 1532 ईसवी में ग्वालियर से 7 मील दूर एक छोटे से गांव देहट में इन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिन्हें तन्ना मिश्र के नाम से और आगे चलकर यह संसार संगीत के महारत्न तानसेन के रूप में जाने जाने लगे।

बाल्यावस्था से ही तानसेन बेहद शरारती और विभिन्न पशु पक्षियों की आवाज को हूबहू निकालने में बेहद माहिर थे अपने बागों की रक्षा करने के लिए ये शेर की आवाज हूबहू निकाला करते थे। एक घटना के फलस्वरूप जब महान संगीताचार्य स्वामी हरिदास उनके बाग के समीप से गुजरे तो बालक तानसेन ने शेर की आवाज निकालकर उन्हें भयभीत किया स्वामी हरिदास जी के साथ के लोग भयभीत हुए लेकिन

स्वामी हरिदास को उस स्थान पर शेर होने का अनुमान नहीं था बाद में जब एक पेड़ के पीछे से बालक तानसेन को लाया गया हो स्वामी जी बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने और पशु पक्षियों की आवाजें सुनी। फिर बालक तानसेन को उनके पिता से मांगकर वृंदावन ले जाने के लिए एवं विधिवत संगीत शिक्षा देने के लिए आज्ञा मांगी।

बालक तानसेन 10 वर्ष की ही आयु में ही स्वामी जी के मार्गदर्शन में संगीत शिक्षा लेकर पारंगत हो चुके थे। इसी बीच तानसेन के पिता जी की मृत्यु हुई पूर्व तानसेन के पिता जी ने कहा था कि तुम्हारा जन्म मोहम्मद गौस नामक फकीर के कृपा से हुआ है इसीलिए तुम्हारे शरीर पर प्रणीत: उनका अधिकार है अपनी जिन्दगी में इस फकीर की आज्ञा का कभी अवहेलना मत करना। पिता के इन वचनों का पालन करते हुए तानसेन फकीर मोहम्मद गौस के पास आ गए और उन्होंने तानसेन को अपना उत्तराधिकारि बना लिया और ग्वालियर में रहने लगे। राजा मानसिंह की विधवा पत्नी रानी मृगनयनी के माध्यम से हुसैनी ब्राह्मणी नामक एक सुमधुर गायिका के साथ तानसेन का विवाह सम्पन्न हुआ। वे अपने

दाम्पत्य जीवन के साथ आनन्दपूर्वक ग्वालियर में रहने लगे इसी बीच तानसेन के चार पुत्र - सूरतसेन, तरंगसेन, शरद सेन और विलास खाँ एवं पुत्री सरस्वती का जन्म हुआ। ये सभी संतानें आगे चलकर उत्कृष्ट कलाकार बने।

सर्वप्रथम तानसेन को रीवा नरेश रामचंद्र अपने दरबार ले गए। सन 1556 ईसवी में तानसेन अकबर के दरबार दिल्ली में नौ रत्नों में शामिल हुए। अकबर और तानसेन के पारस्परिक मधुर संबंधों के कारण अन्य दरबारी कलाकार तानसेन से ईर्ष्या करने लगे और इसी के परिणाम स्वरूप तानसेन के विनाश की एक योजना बनाई और अकबर के पास जाकर उन्होंने कहा महाराज तानसेन ने एक ऐसे राग की रचना की है जिसे तानसेन के अलावा कोई नहीं गा सकता। बादशाह की जिद के कारण तानसेन ने महाराज से कहा कि इसके बहुत अनिष्ट परिणाम होंगे किन्तु अकबर की जिद के कारण तानसेन की एक ना चली और तानसेन को वह दीपक राग गाना पड़ा। राग प्रारम्भ होते ही गर्मी बढ़ने लगी धीरे-धीरे वायुमण्डल अग्निमय हो गया और लोग इधर-उधर गर्मी की वजह से भागने लगे। तानसेन का शरीर

जलने लगा और वह घर भागे। घर पर उनकी पुत्री और उनके गुरु भंगिनी ने मेघ राग गाकर उनके प्राणों की रक्षा की। उनकी गायन की प्रकृति वर्षा भी उनका सहयोग कर अर्थात् जब वो चाहते थे तब अपने गायन से वर्षा, बादलों की गड़गड़ाहट इत्यादि उत्पन्न कर सकते थे। तानसेन ने विभिन्न रागों की रचना की जिसमें दरबारी कान्हड़ा, मिया की सारंग और मिया की मल्हार उल्लेखनीय है।

तानसेन की मृत्यु सन 1585 से दिल्ली में हुई और इनकी समाधि फकीर मोहम्मद गौस की कब्र के समीप ग्वालियर में स्थित है।

अमीर खुसरो :— संगीत जगत में अमीर खुसरो एक ऐसा नाम है। जिसने संगीत को आधुनिकता प्रदान की एवं विभिन्न राग, रागनियों, तालों एवं अनेक वाद्ययंत्रों का अविष्कार कर संगीत जगत को योगदान दिया। बलबन के निवासी अमीर मोहम्मद सैफुद्दीन के घर सन 1253 ईसवी में अमीर खुसरो का जन्म ऐटा जिले के पटियाली नामक स्थान पर हुआ। अमीर खुसरो प्रखर बुद्धि का व्यक्ति था। अतः पिता के देहान्त के बाद उसने दिल्ली के गुलाम वंश के राजा ग्यासुद्दीन बलबन का

Day Thursday

Date 30 / 12 / 2010
Page No: 20
Shivalal

~~अमीर खुसरो~~ राजा ज्ञेय प्राप्त हो गया।
गुलाम वंश के अंत के बाद अमीर खुसरो, अलाउद्दीन खिलजी एवं संगीत के बहुत प्रेमी थे उन्होंने अमीर खुसरो को राज्य का गायक बना लिया।

अमीर खुसरो शेरो शायरी, गजलों के बेहद शौकीन थे और वह अलाउद्दीन खिलजी को नित नई नई शायरी और गजले सुनाया करते थे। खिलजी के दरबार में अन्य अनेक संगीत एवं साहित्य के रत्न थे। जिसने अमीर खुसरो श्रेष्ठ थे। अलाउद्दीन खिलजी ने जब देवगिरी के राजा पर आक्रमण किया तब अमीर खुसरो उनके साथ थे, देवगिरी के राजा की पराजय के बाद उस राज्य के श्रेष्ठ गायक श्री गोपाल गायक को दिल्ली ले आए और अमीर खुसरो ने एक संगीत प्रतियोगिता में छलकर से गोपाल नायक को पराजित तो कर दिया किन्तु अमीर खुसरो, गोपाल नाम के दिल से प्रशंसक थे।

दिल्ली आकर अमीर खुसरो ने संगीत कला में अपूर्व क्रांति पैदा की। अमीर खुसरो ने दक्षिण के शुद्ध स्वर सप्तक की योजना कर लोकरुचि के अनुकूल नए नए रागों की रचना की।

जो आगे चलकर राग वर्गीकरण का एक नवीन प्रकार राग में ग्रहित स्वरों से निकाला, इन्होंने राग में गाने योग्य शब्दों की रचना की जो आगे चलकर ख्यालों के रूप में प्रसिद्ध हुए इस आधार पर संगीत के कुछ विद्वान ख्याल गायकी के निर्माता अमीर खुसरो को ही मानते है। अमीर खुसरो ने एक नवीन गायन शैली कव्वाली और ख्याल गायकी का एक प्रकार - तराना में इन्होंने संगीत जगत को दिया। कहा जाता है कि दक्षिण की वीणा में इन्होंने चार तार की जगह तीन तार लगाए और उसे सहतार की संज्ञा दी। आगे चलकर यही सहतार नामक वाद्य सितार के नाम से जाना जाने लगा। इसी तरह पखावज के दो भाग कर इन्होंने संगीत जगत के एक ताल वाद्य दिया जिसे हम आज तबले के नाम से जानते है। इन्होंने कुछ नये राग पूरिया, साजगिरी, पूर्वी, जिला, शहाना एवं तालों में त्रिताल, झूमरा, आड़ा चौताल, पश्तो और सूलफाक तालों का अविष्कार किया।

अमीर खुसरो एक श्रेष्ठ लेखक भी थे। इन्होंने कई कहावतों और पहेलियों की रचना की। उनकी एक पहेली -

एक थाल में अपने, सब कोइ खाये।
घर में होवे, घर खा जाये॥

अमीर खुसरो ने कुछ पुस्तकों की रचना की जिसमें से कुछ पुस्तकें आज भी उपलब्ध हैं।

सन् 1325 ईसवी में अमीर खुसरो के उस्ताद निजामुद्दीन औलिया के निधन हो जाने से उन्हें हार्दिक दुःख हुआ और अमीर खुसरो की संसार से विरक्ति होने लगी और अंततः 1326 ईसवी में अमीर खुसरो की मृत्यु हो गई। आज भी दिल्ली में अमीर खुसरो की कब्र उनके गुरु के पायताने बनाई गई जहाँ आज भी प्रतिबंध कव्वाल लोग लोग उनकी याद में उर्स मानते हैं।

रागों का समय विभाजन

उत्तर - भारतीय संगीत पद्धति मे रागों का प्रयोग काल (गान - वादन का समय) दिन और रात्रि के चौबीस घंटों के दो भाग करके बाँटा गया है। पहला भाग बारह बजे दिन से बारह बजे रात्रि तक और दूसरा भाग बारह बजे रात्रि से बारह बजे दिन तक माना जाता है। इसमे पहले भाग को पूर्व भाग और दूसरे भाग को उत्तर भाग कहते है।

पूर्वराग - जो राग दिन के बारह बजे से रात्रि के बारह बजे तक (पूर्व - भाग के समय मे) गाए बजाए जाते है, उन्हे 'पूर्व - राग' कहते है।

उत्तरांग राग - जो राग बारह बजे रात्रि से दिन के बारह बजे तक (उत्तर भाग के समय मे) गाए बजाए जाते है, उन्हे उत्तर राग कहते है।

पूर्व राग और उत्तर राग को ही प्रचार मे पूर्वांगवादी तथा उत्तरांग वादी राग भी कहते है। यहाँ पर यह बता देना भी आवश्यक है कि इनको पूर्वांगवादी राग या उत्तरांग वादी राग क्यों कहते है?

सप्तक के सात शुद्ध स्वरों मे तार सप्तक का सां मिलाकर सा रे ग म प ध नि सां इस प्रकार स्वरों की व्यवस्था ओढ कर ली जाए और फिर इसके दो भाग कर दिए जाए तो 'सा रे ग म' यह सप्तक का पूर्वांग और 'प ध नि सां' यह सप्तक का उत्तरांग कहा जाएगा।

पूर्वांगवादी राग - जिन रागो का वादी स्वर सप्तक के पूर्वांग अर्थात 'सा रे ग म' इन स्वरों मे से होता है वे पूर्वांगवादी राग कहे जाते है। ऐसे राग प्रायः दिन के पूर्व भाग अर्थात बारह बजे दिन से बारह बजे रात्रि तक के समय मे गाए बजाए जाते है।

उत्तरांग वादी राग – जिन रागों का वादी स्वर सप्तक के उत्तरांग अर्थात 'प ध नि सां' इन स्वरों में से होता है, वे 'उत्तरांगवादी राग' कहे जाते हैं। ऐसे राग प्रायः दिन के उत्तर भाग अर्थात बारह बजे रात्रि से बारह बजे दिन तक ही गाए जाते हैं।

उपर्युक्त वर्गीकरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि राग के वादी स्वर को जान लेने पर राग के गान-वादन का समय ज्ञात हो जाता है। जैसे आसावरी का वादी स्वर धैवत है अर्थात सप्तक का उत्तरांग स्वर है तो इसके गान-वादन का समय भी प्रातः है सप्तक का उत्तरांग स्वर है तो इसके गान-वादन का समय (उत्तर भाग) है इसी के अन्तर्गत प्रातः काल आ जाता है। यमन का वादी स्वर गान्धार है जो कि सप्तक के पूर्वांग में रखे गया हुआ स्वर है अतः यमन के गान-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है जो कि दिन के बारह बजे से रात्रि के बारह बजे तक के क्षेत्र (पूर्व भाग) में आता है। इसलिए यमन पूर्वांगवादी राग है कहा जाएगा और आसावरी को उत्तरांगवादी राग कहेंगे।

संधि प्रकाश राग – ऊपर बताए गए तीन अंगों में से प्रथम वर्ग अर्थात कोमल 'रे' व कोमल 'ध' वाले राग संधि प्रकाश रागों की श्रेणी में आ जाते हैं। ध्यान रहे इस वर्ग में कोमल रे ध के साथ-साथ तीव्र 'ग' होना जरूरी है। यदि तीव्र 'ग' के स्थान पर कोमल 'ग' होगा तो वह तीसरे वर्ग में आ जाएगा। दिन-रात्रि की संधि अर्थात मेल होने के समय को संधि काल कहते हैं। प्रातः सूर्योदय से कुछ पहले और शाम को सूर्यास्त से कुछ पहले का समय ऐसा होता है कि जिसे न तो दिन कह सकते न रात। इसी समय को संधि प्रकाश की बेला कहा गया है जैसे

और इस बेला मे जो राग गाये बजाये जाते हैं, उन्हें ही "संधि प्रकाश राग कहते हैं, जैसे- भैरव, कलिंगडा, भैरवी, पूर्वी, मारवा आदि। संधिप्रकाश के भी दो भाग माने गए हैं- ① प्रातः कालीन संधिप्रकाश राग और ② सायंकालीन संधिप्रकाश राग। जो राग सूर्योदय के समय गाए-बजाये जायेगें वे प्रातः कालीन संधिप्रकाश राग होगें। और जो सूर्यास्त के समय गाये बजाये जायेगे, उन्हें सायंकालीन संधिप्रकाश राग कहेगें।

संधिप्रकाश रागों में मध्यम स्वर को महत्व का है। प्रातः कालीन संधिप्रकाश रागों में अधिकतर मध्यम कोमल या शुद्ध होगा और सायंकालीन संधिप्रकाश रागों में अधिकतर मध्यम तीव्र मिलेगा जैसे भैरव व कलिंगडा प्रातः कालीन संधिप्रकाश राग है, क्योंकि इनमें मध्यम शुद्ध है, तथा पूर्वी और मारवा सायंकालीन ~~राग है~~ संधिप्रकाश राग है, क्योंकि इसमें तीव्र मध्यम है।

संधिप्रकाश रागों की एक पहचान यह भी है, कि चैवत स्वर चाहे कोमल हो या तीव्र, किंतु उनमें 'रे' कोमल और 'ग-नि' तीव्र ही अधिकतर मिलेंगें। कोई-कोई संधिप्रकाश राग इस नियम का अपवाद भी हो सकता है, जैसे- भैरवी।

शुद्ध "रे-ध" वाले राग - "रे-ध" शुद्ध (तीव्र) वाले रागों के गाने बजाने का समय संधिकाल के बाद आता है। क्योंकि संधिप्रकाश काल दिन में दो बार आता है, अतः इस वर्ग के रागों के गाने का समय भी चौबीस घंटे में दो बार आता है। इसमें कल्याण, बिलावल खमाज आदि के राग गाये बजाये जाते हैं।

प्रातः कालीन संधिप्रकाश रागों के बाद गाये बजाये जाने वाले रागों में दिन चढ़ने के साथ ही शुद्ध रे-ध की प्रधानता बढ़ती जाती है। इस वर्ग में ग का शुद्ध होने के साथ ही रागों में मध्यम स्वर विशेष महत्व है। इस प्रकार प्रातः सात बजे से दस बजे तक गाये बजाये जाने वाले रागों में शुद्ध अर्थात कोमल मध्यम की प्रधानता होती है जैसे बिलावल, देशकार तोड़ी, आदि और शाम के सात बजे से दस बजे तक गाये बजाने वाले रागों में तीव्र मध्यम की प्रधानता होती है जैसे यमन, शुद्ध कल्याण, भोपाली आदि।

mycompanion

कोमल "ग-नि" वाले राग -

इस वर्ग के रागों को गाने का समय शुद्ध रे-ध रागों के बाद आता है, अर्थात कोमल ग-नि वाले राग दिन में दस बजे से चार बजे तक और रात्रि में दस बजे से चार बजे तक गाये बजाये जाते हैं। इस वर्ग के रागों की पहचान यह है, कि उनमें ग कोमल जरूर होगा, चाहे रे-ध शुद्ध हो या कोमल। इस वर्ग के रागों में प्रातः काल आसावरी, जौनपुरी गांधारी, तोड़ी इत्यादि राग और रात्रि में यमन गाने के बाद जैसे-जैसे आधी रात का समय आता है, बागेश्री जयजयवंती, मालकौंस आदि राग गाये बजाये जाते हैं।

my companion

यहाँ हम रागों के गाने-बजाने की एक तालिका दे रहे हैं, जो कि रात्रि के प्रथम प्रहर के प्रमुख राग यमन से आरम्भ होती है क्योंकि गायक-वादक प्रायः यमन राग से ही मध्य गान-वादन प्रारम्भ करते हैं। इस तालिका में भैरवी को इसलिए छोड़ दिया गया है कि महफिल की समाप्ति प्रायः भैरवी पर ही करने का विधान है। अतः भैरवी का गान-वादन यद्यपि प्रातःकाल होता है किन्तु यदि कोई कार्य न भी महफिल समाप्त पर ही भैरवी सुनाई जाती है। इसी प्रकार दिन में भी एक-दो बजे कभी-कभी भैरवी सुनाई दे जाती है।

तीव्र मध्यम वाले राग

(1) यमन
(2) शुद्ध-कल्याण
(3) हिंडोल :- इस राग के विषय में दो मत प्रचलित हैं। रात्रिगेय हिंडोल में गांधार वादी होता है किन्तु प्रातःकाल गाने वाले धैवत वादी मानते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि वसंत ऋतु में यह राग चाहे किसी समय गाया जा सकता है।
(5) सुघराई
(6) श्री कल्याण

तीव्र मध्यम वाले राग

(7) हमीर (11) विहाग
(8) केदार (12) शंकरा (मध्यम का अभाव)
(9) कामोद
(10) छायानट

तीव्र 'म' तथा कोमल 'नि' वाले राग

(13) खमाज
(14) देश
(15) तिलक कामोद
(16) जयजयवन्ती (परमेल प्रवेशक राग) कुछ विद्वान जयजयवन्ती के उपरान्त ही मालकौंस गाने का आदेश बताते हैं।

कोमल 'ग' एवं कोमल 'नि' वाले राग

(17) बागेश्री
(18) दरबारी
(19) सोहनी
(20) पूरिया (इस राग को रात्रि काल पूरिया भी कहा जाता है क्योंकि प्रकृति में प्रायः दिन का पूरिया कहा जाता है)
(21) बहार
(22) मालकौंस

परमेल प्रवेशक राग :-
परमेल का शाब्दिक अर्थ है कोई मेल और प्रवेशक का अर्थ है प्रवेश करने वाला अर्थात परमेल प्रवेशक राग उन्हें कहते हैं जो किसी एक मेल (ठाठ) से किसी दूसरे मेल (ठाठ) में प्रवेश करते हैं। उदाहरणार्थ - संध्या काल में गाए जाने वाले सांधिप्रकाश रागों को लेकर जब गायक अचानक स्वर दूसरे किसी मेल के राग गाने लगता है जैसे - भीम पलासी, पटमंजरी और धानी लेकर जब कोई गायक मुलतानी गाने लगते हैं तो इससे यह संकेत होता है कि अब गायक किसी दूसरे

ठाठ (यमन इत्यादि) में प्रवेश करने वाला है इस प्रकार कुलतानी परमेल प्रवेशक राग हुआ माना गया है इस उदा. से यह और स्पष्ट किया जा सकता है

कि इसे शिव रंजनी वाले वर्ग के साथ तीव्र समय समाप्त हो जाता है और 'ग-नि' वाले वर्ग के साथ मध्य स्थानों को स्पर्श का समय आने वाला है। इस प्रकार जयजयवंती परमेल प्रवेशक राग कहना उचित है क्योंकि जयजयवंती में शुद्ध स्वर वर्ग तथा रागिनी कौमल वाले वर्ग दोनों की ही मुख्य विशेषताएँ मौजूद होती। जयजयवंती में दोनों विकृत और शुद्ध स्वर लगते हैं। अतः यह राग इस मेल प्रवेशक होने की योग्यता रखकर परमेल प्रवेशक राग कहलाता है।

गायक के गुण - अवगुण

गौरव स्वर, भाव तथा भाषा के उचित रूप से साधना करते हुए जो गायक गाता है उसका संगीत रसीला रूप होकर श्रोताओं के मन को जीतने में अवश्य ही सफल होता है। इसलिए प्राचीन ग्रंथकारों ने गायकों के गुण - अवगुणों का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया है। उन नियमों पर ध्यान देकर जो संगीतज्ञ अपनी कला का प्रदर्शन करता है उसके गाने का रंग महफिल में शीघ्र ही जम जाता है। इसके विपरीत कुछ गायक ऐसे दिखाई जाते हैं जिन्होंने या तो गायकों के गुणागुणों का शास्त्रों में मनन ही नहीं किया है अथवा वे उन्हें जानते

हुए भी अपनी आदत से मजबूर होकर उन पर ध्यान नहीं देते। इसका परिणाम यह होता है कि उनकी भद्दी हरकतें (मुद्राएँ) महफिल में रंग जमाने का बजाय हास्य का वातावरण पैदा कर देती हैं। श्रोताओं में सभी तरह के व्यक्ति होते हैं। कोई श्रोता गीत की कविता पर ध्यान देते हैं। कोई गायक के सुरीलेपन और स्वरकारी को देखकर हैं और कोई गायक-गायिका के रंग-रूप तथा उसके हाव-भाव प्रदर्शित करने के ढंग में ही आनन्द लेता है। इस प्रकार संगीत कला के सभी अंगों से भिन्न-२ प्रकार के श्रोता अपनी-२ रुचि के अनुसार रसास्वादन करते हैं। ऐसी हालत में यह निश्चित ही है कि गायक के कुछ अनुचित महफिल में रंग जमाने या विमा में बहुत सहायक होते हैं। अतः प्रत्येक संगीत विद्यार्थी को आरम्भ से ही ध्यान देकर गायकी के कुछ अनुचित तरीकों और अवगुणों से बचना चाहिए। आरम्भ में जैसी आदत पड़ जाती है वह आसानी से नहीं छूटती। यदि शुरू में ही हाथ-पैर फेंक-फेंककर या टेढ़ा-मेढ़ा मुँह कर के अपने रूप से दाँत दिखाकर गाने की आदत पड़ गई तो उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाएगा और इसका परिणाम यह होगा कि संगीत-समाज में इसे सम्मान और सफलता कदापि नहीं मिलेगी।

गायक के गुण

हयशब्द: सुशारीरो ग्रहमोक्षविचक्षण: ।
रागरागांगभाषांग क्रियांगोपांग कोविद: ॥
प्रबन्धगाननिष्णातो विविधालप्तितत्ववित् ।
सर्वस्थानोच्चकण्ठश्च स्वरालापश्च तद्गति: ॥
आयत्तकण्ठस्तालज्ञ: स्वरावधानो मितक्रम: ।
शुद्धच्छायालगोपेत: सप्तकृत्कीर्तिमान्वित: ॥
अपारश्चायचर्चाज्ञ: सर्वदोषविवर्जित: ।
क्रियाप्रयोगतत्त्वज्ञ: सुवाक्यो धारणान्वित: ॥
स्फूर्तिमान्विनयी धीर: सुवेषश्चतुरो वशी ।
सुखप्रदाता गीतज्ञैर्गीयते गायनागुणी: ॥

भावार्थ इस प्रकार है:-

1. हयशब्द :- जिसका शब्द अर्थात् आवाज मधुर व सुरीली हो।
2. सुशारीर :- जिसकी वाणी में अभ्यास के बिना राग स्वरूप व्यक्त करने का धर्म हो।
3. ग्रहमोक्षविचक्षण :- जो ग्रह और न्यास के नियमों को जानने वाला हो।
4. रागरागांगकोविद :- जो भाषांग क्रियांग उपांग राग-रागांग आदि का ज्ञाता हो। देशी संगीत में रागांग, भाषांग, क्रियांग और उपांग, चार भेद करते गये हैं।
5. प्रबन्धगाननिष्णात :- जो प्रबन्धगान में प्रवीण हो। प्रबन्ध गीत पूर्व काल की प्राचीन गान शैली है जो वर्तमान समय में प्रचलित नहीं है।
6. विविधालप्तितत्ववित् :- जो भिन्न-भिन्न आलप्तियों के तत्व का ज्ञाता हो अर्थात् आलाप करने की गूढ़ बातें (राग का मर्मभाव,

7. तिरोभाव (छिपाने की कला) जानता है।
सर्वस्थानोच्चगमकध्वनया सलसद्गति – जो सब
स्थानों की
गमक सहित में ही ले सकता है अर्थात् मंद्र
मध्य और तार स्थानों में गमकों
का प्रयोग करता है।
8 अविलम्बकर – जो शीघ्रकर्ता (वाला) स्वाधीन हो
9 अपर्वि – जो थकावट हुई न मालूम हो।
10. वाक्वश – जो लक्ष्य वाक्य को समझने वाला हो।
जितश्रम – जो श्रम को जीतने वाला हो अर्थात्
गाते समय यह अनुभव न हो कि
मानो मैं बड़ा परिश्रम करना पड़ रहा है।
11. सावधान – जो एकाग्रचित्त होकर सावधानी-
पूर्वक गाता
12 शुद्धच्छायालगामिन – जो शुद्ध, छायालग
और संकीर्ण राग
भेदों को जानने वाला हो (इन राग भेदों की परिभाषा
पुस्तक में दी गई है।)
13 सर्वाङ्गविशेषवित् – जो संगीत शास्त्र में विशेष
व्युत्पत्ति का प्रयोग करने की जानकारी रखता है।
14 अपारश्रमसंचर – जो गाते समय उत्साह
स्थान अथवा श्रोताओं के भाव
या रुचि को तैयार करके
15 सर्वदोषत्रिवर्जित – जो सब प्रकार के दोषों से रहित
हो अर्थात् जिसमें कोई दोष न हो
16 क्रियावर – जो अभ्यास में दक्ष हो अर्थात् रियाज़ी
17. अजस्रलय – जो अत्यन्त लय के समीप हो।
18. सुघट – जो सुघड़ (सुन्दर) हो अर्थात् जिसे
देखकर मस्तक घृणा न करे।
श्रोता

19 धारणान्वित - जो धारणावान हो।

20 स्फुटनिर्जवन - जो निर्जवन (स्थायी की एक विशेष भाग) को गाते समय मेघ गर्जना के समान गम्भीर ध्वनि निकालने वाला हो।

21 परिरहः - जो अपने गायन से श्रोताओं को मोहित करने वाला हो।

22 सुखप्रदेय - जिसकी सुख परम्परा उच्च श्रेणी की हो, अर्थात् जो उच्च सम्प्रदाय का हो।

गायक के अवगुण

संदष्ट्रोदघृष्ट सूत्कारिशीत भयंकरः।
कण्ठी विकटः काकी विताल कलहोद्भवः॥
झोकार कुस्वरी वक्त्री प्रसारी विनिमीलकः।
विरसापस्वरो व्यक्तस्थानभ्रष्टो व्यवस्थितः॥
मिश्रको ऽनवधानश्च तथाऽन्य स्पष्टनासिकः।
पंचविंशतिरेतेषां गायका निन्दिता मतंगिकः॥

संगीत रत्नाकर के प्रकार से संगीत रत्नाकर से काकु के नाम इस प्रकार दिए गए हैं (1) स्वर काकु (2) रागिणी काकु (3) देशभाषा काकु (4) क्षेत्र काकु (5) अन्य राग काकु (6) यन्त्र काकु

भावार्थ इस प्रकार है -

1. संदष्ट - दाँत पीसकर गाने वाला हो।
2. उद्घृष्ट - जो जोरदार जोर से आवाज करने वाला हो।
3. सूत्कारी - जो गाते समय सूत्कार गाने वाला हो।

4 भीत – जो भयभीत होकर गाने वाला हो अर्थात जो डरते हुए गाए

5 शंकित – जो आत्मविश्वास रहित होकर गाए अर्थात जो घबराकर कम्पन वाली से गाने वाला हो।

6 कंपित – जो कंपित होकर गाने वाला हो।

7 खरखरी – जो खरखर मुँह फाड़कर गाने वाला हो।

8 विकल – जिसके गाने में श्रुतियाँ कम या अधिक बार बार विकृति हो अर्थात जिसके स्वर अपने उचित स्थान पर न रहे।

9 काकी – जो कौए के समान कर्कश आवाज निकालता हो।

10 विताल – जो बेताले गाने वाला हो।

11 करभ – मुँह नीचे करके गाने वाला हो।

12 उद्घुष्ट – जो ऐसे स्वर मुँह फाड़कर गाने वाला

13 शोंकर – जो गले ऊपर मुँह को ऐसे फैलाकर गाने वाला हो।

14 डुम्बकी – जो डुम्बे के समान मुँह फुलाकर गाने वाला हो।

15 वक्री – जो मुँह टेढ़ी करके गाने वाला हो।

16 प्रसारी – जो हाथ पैर फेंककर और हाथ पैर पटककर गाने वाला हो।

17 विनिमीलक – जो आँखें बंद करके अथवा आँखें मीचकर गाने वाला हो।

18 विरस – जिसके गाने में रस न हो अर्थात नीरस गाने वाला हो।

19 अपस्वर – जिसके गाने में कर्कश स्वर भी हो – [illegible]

20 अव्यक्त – जिसका गाने में शब्दोच्चारण ठीक न हो। – विकृत

21. स्थानभ्रष्ट - जिसकी आवाज ~~सम्~~योग्य स्थान पर न पहुँचती हो।

22. अव्यवस्थित - जो बेढंगे तरीके से अथवा अव्यवस्थित रीति से गाने वाला हो।

23. मिश्रित - जो राग मिश्रित करके (रागों को मिला) गाने वाला हो।

24. ~~अनुनासिक~~ - जो लापरवाही से गाने वाला हो।

25. ~~अनुनासिक~~ - जो नाक से स्वर से गाने वाला ~~जो हिचकिचाते हुए गाने वाला~~ ~~अनावश्यक निकले~~।

अमीर खुसरो

~~संगीत जगत में अमीर खुसरो का नाम~~ ~~भुलाया नहीं जा सकता~~ ~~संगीत को आधुनिक~~ ~~रूप प्रदान करने में इनका बहुत बड़ा हाथ है~~ अमीर खुसरो का जन्म सन् 1253 में इटावा जिले के पटियाली नामक स्थान पर हुआ। उनके पिता का नाम अमीर मोहम्मद सैफुद्दीन था जो बलख से पटियाली आकर बस गया था। अमीर खुसरो प्रसिद्ध फारसी कवि थे। अतः पिता के देहान्त के बाद उसे तत्कालीन मुगल वंश के राजा गयासुद्दीन बलबन का आश्रय प्राप्त हो गया। बचपन से साहित्य और संगीत के प्रति विशेष रुचि उत्पन्न हुई। कुछ दिनों तक कई राज्यों में नौकरी करने के बाद वे अलाउद्दीन खिलजी के पास चले गये। अलाउद्दीन स्वयं संगीत का बड़ा प्रेमी था। उसने उसे राज्य का आश्रय बना लिया। खुसरो शायरी भी किया करता था और प्रतिदिन अलाउद्दीन खिलजी को नये नये गजल सुनाया करता

था। अलाउद्दीन के दरबार मे कई अन्य संगीतज्ञ थे, जिनमे खुसरो को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। कहा जाता है कि जब अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण भारत के देवगिरि राज्य पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की तो अलाउद्दीन के साथ अमीर खुसरो भी था। रामपाल नायक देवगिरि का राज्य गायक था। वह दिल्ली मे पुतिरोगलिए हुए खुसरो के बल पर उसे दरबार दिया। खुसरो को गोपाल की विद्वता की सच्ची परख थी अतः वह उसे दिल्ली ले गया और उसके संपर्क मे रहकर संगीत मे महत्वपूर्ण कार्य किए जो इस प्रकार है:-

अमीर खुसरो ने तत्कालीन प्रचलित का विकास किया और उसके अनुकूल नये-नये वाद्यों की रचना की। आधुनिक काल मे लोकप्रिय गीत छोटा ख्याल को जन्म देने का श्रेय इसी को प्राप्त होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार इन्होंने छोटा ख्याल, कव्वाली तथा तराना तीनों का आविष्कार किया। इसके तराने प्रायः एकताल मे होते थे जिनमे फारसी के शेर होते थे। इसके अतिरिक्त उसने कई वाद्यों को जन्म दिया। कहा जाता है कि उसने दक्षिण वीणा मे सितार के स्थान पर उतारा लगाया और उसे सहतार की संज्ञा दी। फारसी मे सह का अर्थ 3 होता है। सहतार धीरे-धीरे सितार हो गया। तबले के विषय मे भी अमीर खुसरो को इसका रचयिता कहा गया है। उसने पखावज को बीच से दो भागों मे विभाजित कर तबले की रचना की।

उसने कुछ नये रागों और कुछ नये तालों की रचना की। रागों मे पूरिया, सोजागिरि, पूर्वी

जिला, शहाना आदि तालों मे त्रिताल, झूमरा, आड़ा चौताल, पश्तो, फ़ुल्फाक आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अमीर खुसरो कई भाषाओं का विद्वान था। कहा जाता है कि वह 12 वर्ष की अवस्था से ही शेर लिखता था, उसने बहुत सी शिक्षा प्रद छोटी पहेलियाँ भी बनाई, जिनमें से नौ पहेलियाँ आज भी लगभग 700 वर्षों के बाद भी प्रचलित है।

जब से देखा मैं उसे सब कोई खाय।
इधर से होकर उधर खा दारू।।

कहा जाता है कि उसने फारसी और संगीत पर कुल 99 पुस्तके लिखी जिनमे से 22 उपलब्ध है। सन् 1325 मे उसके निजामुद्दीन औलिया का देहावसान हो जाने से उन्हें हार्दिक दुख हुआ। उस समय से संसार से विरक्त रहने लगे। इसका जीवन भार स्वरूप मालूम पड़ने लगा। और 1326 मे उनकी मृत्यु हो गई। दिल्ली मे उनकी कब्र उनके गुरु के पास बनाई गई। वहाँ आज भी प्रति वर्ष बड़ा मेला लगता है उनकी याद में उर्स मनाते है।

16 स्वामी हरिदास

'भक्त चरितामृत' के अनुसार स्वामी हरिदास का जन्म सन् 1530 के भादों मास मे (सन् 1480 ई.) में जन्माष्टमी को हुआ था जो सारस्वत ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम आशु धीर तथा माता का नाम गंगादेवी था। दोनों धार्मिक स्वभाव के और साधु सन्तों के बड़े भक्त थे। स्वामी हरिदास मे बाल्यकाल से ही ईश्वर

भक्ति की भावना जाग्रत हुई। उन्होंने 25 वर्ष की अल्पायु में ही सन्यास ले लिया। कुछ समय बाद वे वृंदावन चले गये और 'निधिवन निकुंज' में कुटिया बनाकर रहने लगे। जीवन की कम से कम आवश्यकताओं की पूर्ति उन्हें अधिक सम संतोष देती। वे बस ईश्वर की आराधना और संगीत साधना में लगे रहते। संगीत साधना में हरिदास को नवीन ब्रह्मयोगी कहा गया है। कहा जाता है कि स्वामी जी ने नाद के माध्यम से ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया था।

स्वामी हरिदास के जीवन के विषय में बहुत कम सामग्री प्राप्त होती है। कारण यह है कि उन्होंने कोई साहित्य या संगीत जी अपने विषय में कुछ लिखना पसंद नहीं करता था। अतः स्वामी जी की जन्मतिथि और जन्मस्थान के बारे में बहुत मतभेद है। एक मान्यता उनका जन्म पंजाब के मुलतान अथवा होशियारपुर अथवा हरियाणा के बिनौली गाँव में हुआ था। कुछ लोगों के विचार से उनके पिता पंजाब के अवश्य थे किंतु उनका जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में खैर स्थान पर महादेव के समीप हुआ था। उनके नाम से हरिदास ग्राम बस गया।

स्वामी हरिदास अपनी कुटिया छोड़कर कहीं नहीं जाते थे। अकबर तानसेन के द्वारा स्वामी की प्रशंसा सुना करता था। अतः उनके मन में हरिदास जी का गायन सुनने की इच्छा हुआ। वे तानसेन के साथ वृंदावन गये और स्वामी जी की झोपड़ी के बिल्कुल सामने छिपकर बैठ गये। तब तानसेन ने स्वामी जी के सामने गायन प्रारम्भ किया तो स्वामी जी ने आश्चर्य में आकर तानसेन

की छटा और उसका शुद्ध रूप उनको सुनाया बाहर छिपे बादशाह अकबर आत्म विभोर हो गये। अपने गायन के बाद स्वामी जी ने तानसेन से कहा कि अच्छा नहीं किया। खैर! अब जाओ और बादशाह को अन्दर बुला लाओ। कहते हैं कि अकबर उनके गायन से ऐसा मोहित हुआ कि उसने आकर स्वामी जी के चरण पकड़ लिए। स्वामी जी गायन के अतिरिक्त वादन और नृत्य में भी पारंगत थे। उत्तर भारत में जो कुछ भी संगीत हमें मिलता है वह सब किसी न किसी रूप में स्वामी जी से सम्बद्ध है। स्वामी हरिदास की मृत्यु सम्वत 1630 में हुई। जब वृन्दावन में भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को प्रतिवर्ष हरिदास जयन्ती मनाई जाती है।

कहा जाता है कि स्वामी हरिदास के शिष्य तानसेन, बिरजू बावरे, रामदास, दिवाकर तथा सूर सेन थे। किन्तु इधर किसी भी साहित्य में तानसेन और बिरजू बावरे को स्वामी जी का शिष्य होना नहीं मिलता। तानसेन की रचनाओं में कहीं भी हरिदास स्वामी की भक्ति भावना का दर्शन नहीं होता इसलिए ऐसा मालूम पड़ता है कि एक से अधिक तानसेन हो चुके हैं। स्वामी हरिदास का जन्म ऐसे काल में हुआ था जब भारतीय संगीत अस्त हो रहा था। किन्तु स्वामी जी ने ही उसमें पुनः प्राण प्रतिष्ठा की। कहते हैं कि उन्होंने धमार, त्रिवट और चतुरंग की भी रचना की।

गमक

"स्वरस्य कंपो गमकः श्रोतृचित्त-सुखावहः" अर्थात् उस प्रकार के कंपन को प्राचीन काल में गमक कहते हैं जिससे श्रोताओं का चित्त प्रसन्न हो। आधुनिक काल में गमक की यह परिभाषा नहीं रही। अब स्वरों को गंभीरता पूर्वक उच्चारण करने को गमक कहते हैं। गायन में गमक उच्चारण के लिये सभी पर लागू पड़ता है। ध्रुपद-धमार गायकी का खूब प्रयोग होता है। आधुनिक समय में ख्याल गायन का अधिक प्रचार होने के कारण गमकों का प्रयोग बहुत कम हो गया है। संस्कृत ग्रंथों के अनुसार गमक के 15 प्रकार बताए गए हैं जो निम्न प्रकार हैं -

(i) कम्पित (ii) आहत (iii) आन्दोलित (iv) प्लावित (v) उल्लासित (vi) स्फुरित (vii) त्रिभिन्न (viii) वली (ix) हुंफित (x) वीन (xi) विरुप (xii) मुद्रित (xiii) मीलित (xiv) नामित (xv) कुरुला

(i) कम्पित - इसे आजकल सहकार कहते हैं जिसमें एक मात्रा के काल में कम्पन होता है जैसे- सा।

(ii) आन्दोलित - एक मात्रा के काल में कम्पन करने को आन्दोलित गमक कहते हैं जैसे- नि सा ग प

(iii) आहत - अचार कहते। अर्थात् जब किसी स्वर से अगले स्वर को छूकर मूल स्वर लौटे उसे कोई आहत गमक कहते हैं। जैसे- सा रे रे रे (iv)

(iv) प्लावित - जब स्वरों को 3/4 मात्रा के काल में गाया किया जाए तो उसे प्लावित गमक कहते हैं। जैसे- नि प

(v) उल्लासित - जब स्वर एक क्रम से शीघ्रता से आगे क्रम से बढ़ाया जाए तो उसे उल्लासित गमक कहते हैं जैसे- म म प ध नि सा।

(vi) स्फुरित - इसे आजकल मिटकरी कहते हैं। इसमें

काल 1/6 मात्रा का होता है। जैसे- रे सा नि सा।

(ii) त्रिस्फुरित - जब तीन स्वरों को दुहराकर चौथे पर पहुँचा जाए तो इसे त्रिस्फुरित गमक कहते हैं। इसमें एक के बाद के बीच के स्वर पर एक साथ तीन स्वरों का कण किया जाता है। जैसे- रे ग रे ग रे।

(iii) कम्पित - इसमें आन्दोलन तोड़ा जाता है। जैसे- ध ध।

(iv) कुरुल - जब दुहराने में साथ की ध्वनि से गमक होती है उसे कुरुल गमक कहते हैं। जैसे- प प।

(v) त्रिपुच्छ - जब तोड़ा तथा आधी मात्रा के काल में तीन आंदोलन या पीड़ के स्वर में तीन हो जाए तो उसे त्रिपुच्छ गमक कहते हैं। जैसे- नि सा ह।

(vi) तिरप - इसे आजकल हिंडोल भी कहते हैं। इसमें स्वरों को दोहरे रूप में प्रयोग किया जाता है। यह कम्पन एक मात्रा के काल में होता है। जैसे- सा ह ह ह ह।

(vii) मुद्रित - जब पीड़ पर स्वर के गमक ली जाए तो उसे मुद्रित गमक कहते हैं।

(viii) नामित - जब स्वर के मींड की भाँति चलकर अपने स्थान से नीचे होकर दो स्वरों नामित गमक कहते हैं। जैसे- मंदे ग हरी प्रकार जब नायक की उच्चतम गमक को जब अपनी मात्र स्वर मींड की भाँति चलकर अपने स्थान से ऊँचा या ऊँचे स्वर पर ठहर जाए तो उसे निहित गमक कहते हैं। जैसे- रे ग।

(xiv) मिश्रित - जब ऊपर की गमकों में दो या दो से अधिक गमकों को मिश्रित करके प्रयोग में लाया जाए उसे मिश्रित गमक कहते हैं।

(xv) कुरुल - इसे आजकल घसीट कहते हैं। इसमें स्वरों का द्रुतता के साथ उच्चारण किया जाता है। जैसे- प ग

खटका

स्वरों पर धक्का लगाते हुए एक [illegible] दूसरे स्वर तक जाते हैं, उसे खटका कहते हैं।

मुर्की

यह भी एक प्रकार का कण है [illegible] में तीन स्वरों के युत प्रयोग द्वारा [illegible] है। जैसे रे नि रे या अथवा ध म प [illegible] इसे लिखने के लिए मूल स्वर के [illegible] दो स्वरों का कण लगाया जाता है।

जमजमा

यह एक प्रकार का कण है जिसमें तर्जनी और मध्यमा दोनों का ही प्रयोग होता है। सितार में किसी भी परदे पर बायें हाथ की तर्जनी रखकर दाहिने हाथ से 'दा' अथवा 'रा' बजाते हुए आगे के परदे पर मध्य उँगली रखकर शीघ्रता से हथौड़े से उत्पन्न ध्वनि को जमजमा कहते हैं। जब किसी स्वर पर दूसरे स्वर का स्पर्श खंड रूप में हो तो उसे जमजमा कहते हैं। जब दूसरे स्वर की ध्वनि मिजराब लगाकर उत्पन्न नहीं करनी है वरन् उसे मध्यमा के प्रवाह से ही उत्पन्न करता है। जब इसी क्रिया को एक बार या एक से अधिक बार किया जाता है तो उसे जमजमा कहते हैं।

कृन्तन

कृन्तन का प्रयोग सितार के ऊँचे स्वर से नीचे स्वर पर आते समय इस प्रकार होता है कि बायें हाथ की उँगलियों से झटका के साथ तार

को दबाके एक दम 2 छोड़े से या अधिक स्वर शीघ्रता पूर्वक बजाए जाते हैं किन्तु एक स्वर से दूसरे स्वर का संबंध बना रहता है इसी कृत्य को हेलन कहते हैं

आलाप

जब स्थायी के तार पर दूसरे स्वर के स्थान पर रे बजाया जाए तो चिकारी के तार पर पूरा स्वरों का समुदाय इस प्रकार बजाए जाने को आलाप कहते हैं जाने की सहायता से किसी स्वर को लम्बा किया जा सकता है उदाहरण आलाप सा - दारासरा अथवा सदारा - सदारा

जोड़ आलाप

में गत बजाने से पहले जो आलाप साथ बजाया जाता है उसे ही जोड़

दिगम्बर पद्धति के स्वरलिपि चिन्ह स्वरों के ऊपर नीचे कोई चिन्ह नहीं मध्य सप्तक के शुद्ध स्वर के रूप में - रे ग म प

स्वरों के नीचे हलंत का निशान होता कोमल या विकृत स्वर मानते हैं जैसे ध नि

या विकृत मध्यम को उल्टे हलंत द्वारा प्रकार दिखाते हैं जैसे - म (म्)

4) ऊपर बिंदी वाले स्वर मंद्र - सप्तक के माने जाते हैं जैसे - पं धं निं

5) जिन स्वरों के ऊपर खड़ी लकीर होती है वे तार सप्तक के स्वर होते हैं जैसे = सां, रें, गं, मं

6) स्वर पर मात्राओं के लिए इस प्रकार चिन्ह रखे जाते हैं

- ~ चार मात्रा, जैसे सा
- (दो मात्रा, जैसे सा
- = डेढ़ मात्रा, जैसे सा
- ० आधी मात्रा, जैसे सा
- ⌣ ¼ मात्रा, जैसे प
- ⌣ ⅛ मात्रा, जैसे म

7) उच्चारण के लिए अवग्रह चिन्ह (ऽ) का प्रयोग करते हैं और गीत के अक्षरों के ठहराव को लम्बा करने के लिए (०) का प्रयोग करते हैं जैसे ऽ ग ऽ ऽ प , रे ० ० म

8) स्वरों के नीचे उ, ढ या ढ इत्यादि लिखा हो तो एक स्वर के रूप में प्रयुक्त करते वहाँ 1 मात्रा में उ या ढ बोले जाते हैं।

9) किसी स्वर के ऊपर कोई दूसरा स्वर लिखा हो तो वह स्वर के रूप में प्रयुक्त करते हैं

10) ताल के सम के लिए । चिन्ह लगाते हैं खाली के लिए + चिन्ह का प्रयोग करते हैं अन्य ताली के लिए क्रमशः उन गिनतियों का प्रयोग करते हैं जिन गिनतियों पर ताल लगती होती है।

भातखंडे - पद्धति के स्वरलिपि चिन्ह

1) जिन स्वरों के नीचे - ऊपर कोई चिन्ह नहीं होता उन्हें शुद्ध स्वर मानते हैं जैसे - सा, रे, ग, म

2) जिन स्वरों के नीचे आड़ी रेखा खींच दी गई हो उन्हें कोमल स्वर कहते हैं जैसे - रे, ग, ध, नि

3) तीव्र मध्यम की पहचान के लिए म के ऊपर खड़ी लकीर खींच दी जाती है। जैसे - मं

4) बिन्दु वाले स्वर मंद्र सप्तक के माने जाते हैं। जैसे - मं, प, ध

5) बिन्दु वाले स्वर तार सप्तक के माने जाते हैं। जैसे - रें, सां

6) बिन्दु वाले स्वर मध्य सप्तक के समझे जाते हैं। जैसे - प म ग

7) जिस शब्द के आगे जितने अक्षर हो उस शब्द को उतनी ही मात्रा लगाते हैं जैसे श्याम

8) स्वर के आगे जितनी खड़ी लकीरें हो उस स्वर उतनी मात्रा बढ़ाकर बोलते हैं जैसे - सा - - -

9) स्वर को एक मात्रा से कम बोलने बताने के लिए ~ इस चिन्ह का प्रयोग करते हैं। जैसे

10) स्वर के ऊपर इस प्रकार के चिन्ह को मीड़ कहते हैं - म प ध तीनों अवस्थित यहाँ पर मध्यम से निषाद तक मीड़ ली जाएगी

11) किसी स्वर के ऊपर स्वर दिया हो तो उसे कण - स्वर समझना चाहिए।

जैसे म पर अर्थात् ग को जरा छूते हुए प स्वर को गाना या बजाना है

12) जो स्वर कोष्ठक में बंद हो उसे इस प्रकार गाना चाहिए पहले उसके बाद का स्वर फिर जो कोष्ठक में बंद है फिर उसके पहले का स्वर तथा फिर वही कोष्ठक वाला स्वर अर्थात एक मात्रा मे चार स्वर आए जाएंगे जैसे (प) = ध प म प।

13) ताल के क्रम दिखाने के लिए x चिह्न का प्रयोग करते हैं।

14) खाली के लिए शून्य के चिह्न (०) का प्रयोग करते हैं

15) सम के पहली ताली मानकर अन्य ताली के लिए २, ३, ४ आदि संख्याएं लगाते हैं।

मध्यकाल [मुस्लिम काल]

सन् 800 ई. से 1800 ई. तक

मुसलमानों का आगमन भारत मे 11वी शताब्दी में हुआ। इसी समय से भारतीय संगीत में परिवर्तन आरम्भ हुआ। नए नए रागों का आविष्कार हुआ व तरह-२ के नवीन वाद्य बने। जिनका तत्कालीन मुस्लिम बादशाहों द्वारा आदर हुआ और गायक वादकों का सम्मान होने लगा।

इसके बाद 17वी शताब्दी में संगीत की दशा में विशेष उन्नति नहीं रही क्योंकि इस काल में मुहम्मद गौरी तथा मुसलिमों द्वारा हिन्दु राज्यों से युद्ध होता रहा जिसके कारण देश मे अव्यवस्था फैली अत: संगीत प्रचार के मार्ग में बाधा पड़ना स्वाभाविक ही है

जयदेव कृत 'गीत- गोविन्द'

12 वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गीत-गोविन्द नामक संस्कृत में एक प्रसिद्ध ग्रंथ की [illegible] रचयिता प्रसिद्ध कवि और [illegible] थे। जिन्हें उत्तरभारत का प्रथम [illegible] सम्मान प्राप्त था। गीत गोविन्द [illegible] प्रबंध गीत है। जिनमें [illegible] गायक वाद्य-स्वरों में [illegible]

'संगीत रत्नाकर'

[illegible] का समय 1210 से 1247 [illegible] माना जाता है। यह देवगिरि (दौलताबाद) [illegible] राजा के दरबारी संगीतज्ञ [illegible] शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पंडित शार्ङ्गदेव [illegible] ग्रंथ की रचना की। [illegible] स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, जाति [illegible] विवेचन भली प्रकार किया गया है। [illegible] और उत्तरी संगीत विद्वान इस ग्रंथ [illegible] संगीत का आधार मानते हैं। इसमें गान, [illegible] तथा वाद्य तीनों का विस्तृत वर्णन है। इसमें मात्रा [illegible] अध्याय, राग-विवेकाध्याय, प्रकीर्णक अध्याय, बोल [illegible] प्रबंधाध्याय, तालाध्याय, वाद्याध्याय और वर्ण चिन्ह [illegible] अध्याय के अंतर्गत प्रथम अध्याय में सप्त [illegible] मात्रा [illegible] स्वरूप नायोपाधि और उनके भेदों का वर्णन है। बोल [illegible] ग्राम मूर्च्छनाएँ, ताननिरूपण, स्वर और जाति चिन्ह [illegible] साधारण, स्वर, अलंकार तथा जातियों का विस्तृत [illegible] से वर्णन किया गया है।

उत्तर मध्य काल

इस काल का प्रारम्भ 13 वी शताब्दी के बाद 18 वी शताब्दी तक माना जाता है। इस काल मे फारसी और उत्तर भारतीय संगीत का मिश्रित रूप भली भाँति विकसित हुआ। अतः इसे विकास काल भी कहा जाने लगा। मुसलमान का प्रभाव विशेषकर उत्तर भारत मे रहा इसलिए उत्तर भारत संगीत पर कर्नाटक संगीत की तुलना मे फारसी के संगीत का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। अधिकांश मुसलमान शासको को संगीत से प्रेम था।

ताल परिचय

ताल दीपचन्दी

मात्रा = 14 विभाग = 4 ताली = 3 खाली = 1

इस ताल 1, 5, 11 पर ताली तथा 8 पर खाली होती है।

एकगुण

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धा	धिं	ऽ	धा	धा	ति	ऽ	ता	ति	ऽ	धा	धा
चिन्ह	x			2				0			3	
मात्रा	13	14										
बोल	धिं	ऽ										
चिन्ह												

इस ताल का प्रयोग विशेषकर ठुमरी मे होता है। यह ताल विशेषकर तबले पर बजाया जाता है।